

DZIEJE CHRZEŚCIJAŃSTWA POLSKI I RZECZYPOSPOLITEJ OBOJGA NARODÓW

Eugeniusz Wiśniowski

Parafie w średniowiecznej Polsce

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|------|
| 88 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 | 101 | 102 | 103 | 104 | 105 | 106 | 107 | 108 | 109 | 110 | 111 | 112 | 113 | 114 | 115 | 116 | 117 | 118 | 119 | 120 | 121 | 122 | 123 | 124 | 125 | 126 | 127 | 128 | 129 | 130 | 131 | 132 | 133 | 134 | 135 | 136 | 137 | 138 | 139 | 140 | 141 | 142 | 143 | 144 | 145 | 146 | 147 | 148 | 149 | 150 | 151 | 152 | 153 | 154 | 155 | 156 | 157 | 158 | 159 | 160 | 161 | 162 | 163 | 164 | 165 | 166 | 167 | 168 | 169 | 170 | 171 | 172 | 173 | 174 | 175 | 176 | 177 | 178 | 179 | 180 | 181 | 182 | 183 | 184 | 185 | 186 | 187 | 188 | 189 | 190 | 191 | 192 | 193 | 194 | 195 | 196 | 197 | 198 | 199 | 200 | 201 | 202 | 203 | 204 | 205 | 206 | 207 | 208 | 209 | 210 | 211 | 212 | 213 | 214 | 215 | 216 | 217 | 218 | 219 | 220 | 221 | 222 | 223 | 224 | 225 | 226 | 227 | 228 | 229 | 230 | 231 | 232 | 233 | 234 | 235 | 236 | 237 | 238 | 239 | 240 | 241 | 242 | 243 | 244 | 245 | 246 | 247 | 248 | 249 | 250 | 251 | 252 | 253 | 254 | 255 | 256 | 257 | 258 | 259 | 260 | 261 | 262 | 263 | 264 | 265 | 266 | 267 | 268 | 269 | 270 | 271 | 272 | 273 | 274 | 275 | 276 | 277 | 278 | 279 | 280 | 281 | 282 | 283 | 284 | 285 | 286 | 287 | 288 | 289 | 290 | 291 | 292 | 293 | 294 | 295 | 296 | 297 | 298 | 299 | 300 | 301 | 302 | 303 | 304 | 305 | 306 | 307 | 308 | 309 | 310 | 311 | 312 | 313 | 314 | 315 | 316 | 317 | 318 | 319 | 320 | 321 | 322 | 323 | 324 | 325 | 326 | 327 | 328 | 329 | 330 | 331 | 332 | 333 | 334 | 335 | 336 | 337 | 338 | 339 | 340 | 341 | 342 | 343 | 344 | 345 | 346 | 347 | 348 | 349 | 350 | 351 | 352 | 353 | 354 | 355 | 356 | 357 | 358 | 359 | 360 | 361 | 362 | 363 | 364 | 365 | 366 | 367 | 368 | 369 | 370 | 371 | 372 | 373 | 374 | 375 | 376 | 377 | 378 | 379 | 380 | 381 | 382 | 383 | 384 | 385 | 386 | 387 | 388 | 389 | 390 | 391 | 392 | 393 | 394 | 395 | 396 | 397 | 398 | 399 | 400 | 401 | 402 | 403 | 404 | 405 | 406 | 407 | 408 | 409 | 410 | 411 | 412 | 413 | 414 | 415 | 416 | 417 | 418 | 419 | 420 | 421 | 422 | 423 | 424 | 425 | 426 | 427 | 428 | 429 | 430 | 431 | 432 | 433 | 434 | 435 | 436 | 437 | 438 | 439 | 440 | 441 | 442 | 443 | 444 | 445 | 446 | 447 | 448 | 449 | 450 | 451 | 452 | 453 | 454 | 455 | 456 | 457 | 458 | 459 | 460 | 461 | 462 | 463 | 464 | 465 | 466 | 467 | 468 | 469 | 470 | 471 | 472 | 473 | 474 | 475 | 476 | 477 | 478 | 479 | 480 | 481 | 482 | 483 | 484 | 485 | 486 | 487 | 488 | 489 | 490 | 491 | 492 | 493 | 494 | 495 | 496 | 497 | 498 | 499 | 500 | 501 | 502 | 503 | 504 | 505 | 506 | 507 | 508 | 509 | 510 | 511 | 512 | 513 | 514 | 515 | 516 | 517 | 518 | 519 | 520 | 521 | 522 | 523 | 524 | 525 | 526 | 527 | 528 | 529 | 530 | 531 | 532 | 533 | 534 | 535 | 536 | 537 | 538 | 539 | 540 | 541 | 542 | 543 | 544 | 545 | 546 | 547 | 548 | 549 | 550 | 551 | 552 | 553 | 554 | 555 | 556 | 557 | 558 | 559 | 560 | 561 | 562 | 563 | 564 | 565 | 566 | 567 | 568 | 569 | 570 | 571 | 572 | 573 | 574 | 575 | 576 | 577 | 578 | 579 | 580 | 581 | 582 | 583 | 584 | 585 | 586 | 587 | 588 | 589 | 590 | 591 | 592 | 593 | 594 | 595 | 596 | 597 | 598 | 599 | 600 | 601 | 602 | 603 | 604 | 605 | 606 | 607 | 608 | 609 | 610 | 611 | 612 | 613 | 614 | 615 | 616 | 617 | 618 | 619 | 620 | 621 | 622 | 623 | 624 | 625 | 626 | 627 | 628 | 629 | 630 | 631 | 632 | 633 | 634 | 635 | 636 | 637 | 638 | 639 | 640 | 641 | 642 | 643 | 644 | 645 | 646 | 647 | 648 | 649 | 650 | 651 | 652 | 653 | 654 | 655 | 656 | 657 | 658 | 659 | 660 | 661 | 662 | 663 | 664 | 665 | 666 | 667 | 668 | 669 | 670 | 671 | 672 | 673 | 674 | 675 | 676 | 677 | 678 | 679 | 680 | 681 | 682 | 683 | 684 | 685 | 686 | 687 | 688 | 689 | 690 | 691 | 692 | 693 | 694 | 695 | 696 | 697 | 698 | 699 | 700 | 701 | 702 | 703 | 704 | 705 | 706 | 707 | 708 | 709 | 710 | 711 | 712 | 713 | 714 | 715 | 716 | 717 | 718 | 719 | 720 | 721 | 722 | 723 | 724 | 725 | 726 | 727 | 728 | 729 | 730 | 731 | 732 | 733 | 734 | 735 | 736 | 737 | 738 | 739 | 740 | 741 | 742 | 743 | 744 | 745 | 746 | 747 | 748 | 749 | 750 | 751 | 752 | 753 | 754 | 755 | 756 | 757 | 758 | 759 | 760 | 761 | 762 | 763 | 764 | 765 | 766 | 767 | 768 | 769 | 770 | 771 | 772 | 773 | 774 | 775 | 776 | 777 | 778 | 779 | 780 | 781 | 782 | 783 | 784 | 785 | 786 | 787 | 788 | 789 | 790 | 791 | 792 | 793 | 794 | 795 | 796 | 797 | 798 | 799 | 800 | 801 | 802 | 803 | 804 | 805 | 806 | 807 | 808 | 809 | 810 | 811 | 812 | 813 | 814 | 815 | 816 | 817 | 818 | 819 | 820 | 821 | 822 | 823 | 824 | 825 | 826 | 827 | 828 | 829 | 830 | 831 | 832 | 833 | 834 | 835 | 836 | 837 | 838 | 839 | 840 | 841 | 842 | 843 | 844 | 845 | 846 | 847 | 848 | 849 | 850 | 851 | 852 | 853 | 854 | 855 | 856 | 857 | 858 | 859 | 860 | 861 | 862 | 863 | 864 | 865 | 866 | 867 | 868 | 869 | 870 | 871 | 872 | 873 | 874 | 875 | 876 | 877 | 878 | 879 | 880 | 881 | 882 | 883 | 884 | 885 | 886 | 887 | 888 | 889 | 890 | 891 | 892 | 893 | 894 | 895 | 896 | 897 | 898 | 899 | 900 | 901 | 902 | 903 | 904 | 905 | 906 | 907 | 908 | 909 | 910 | 911 | 912 | 913 | 914 | 915 | 916 | 917 | 918 | 919 | 920 | 921 | 922 | 923 | 924 | 925 | 926 | 927 | 928 | 929 | 930 | 931 | 932 | 933 | 934 | 935 | 936 | 937 | 938 | 939 | 940 | 941 | 942 | 943 | 944 | 945 | 946 | 947 | 948 | 949 | 950 | 951 | 952 | 953 | 954 | 955 | 956 | 957 | 958 | 959 | 960 | 961 | 962 | 963 | 964 | 965 | 966 | 967 | 968 | 969 | 970 | 971 | 972 | 973 | 974 | 975 | 976 | 977 | 978 | 979 | 980 | 981 | 982 | 983 | 984 | 985 | 986 | 987 | 988 | 989 | 990 | 991 | 992 | 993 | 994 | 995 | 996 | 997 | 998 | 999 | 1000 |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|------|

Spis treści

| | |
|---|----|
| Przedmowa | 5 |
| Wstęp | 9 |
| Rozdział I | |
| Geneza i rozwój przestrzenny organizacji parafialnej | 15 |
| 1. Problem początków organizacji parafialnej w Polsce w literaturze | 15 |
| 2. Proces rozwoju sieci kościelnej w X-XII w. | 18 |
| 3. Problem zagęszczenia placówek kościelnych w XII w. na tle dynamiki rozwoju sieci parafialnej w średniowieczu | 28 |
| 4. Okręgi parafialne a okręgi administracji państwowej i majątków ziemskich | 34 |
| 5. Początki organizacji parafialnej na Węgrzech, w Czechach, Pomorzu Zachodnim i płynące stąd wnioski dla stosunków polskich | 37 |
| 6. Sieć parafialna w XIV i na przełomie XV/XVI w. | 43 |
| 7. Przemiany w strukturze i funkcji okręgów parafialnych | 50 |
| Rozdział II | |
| Kler parafialny | 57 |
| 1. Kategorie kleru parafialnego | 57 |
| a) Plebani | 57 |

Spis treści

| | |
|---|-----|
| b) Wikariusze | 88 |
| c) Prebendarze | 105 |
| d) Inne kategorie kleru parafialnego | 115 |
| Lektorzy | 116 |
| Grajaliści | 118 |
| „Zastępcy” – Substituti | 119 |
| Komendarze | 120 |
| Zakrystianie | 120 |
| Kaznodzieje | 121 |
| Mansjonarze | 121 |
| Inni duchowni | 121 |
| 2. Problem kumulacji beneficjów | 122 |
| 3. Globalna liczebność duchowieństwa parafialnego i jego rozmieszczenie | 131 |
| 4. Pochodzenie duchowieństwa | 153 |
| a) Pochodzenie narodowe | 153 |
| b) Pochodzenie terytorialne | 154 |
| c) Pochodzenie stanowe | 157 |
| 5. Wykształcenie | 158 |
| 6. Zagadnienie celibatu | 165 |
| Rozdział III | |
| Wierni | 167 |
| 1. Aktyw parafialny | 167 |
| a) Patroni | 167 |
| b) Witrycy | 175 |
| c) Bractwa | 188 |
| 2. Początki organizacji brackich i ich rozwój na Zachodzie | 189 |
| 3. Początek i rozwój organizacji brackich na ziemiach polskich | 191 |
| 4. Struktura organizacyjna i funkcje społeczne | 198 |
| a) Zarząd | 198 |
| b) Członkowie | 199 |
| Rekrutacja | 199 |
| Prawa i obowiązki | 202 |
| c) Oltarz bracki | 209 |
| d) Fundusze | 210 |
| e) Uczty brackie | 210 |
| f) Liczebność członków | 212 |
| 5. Praktyki religijne | 214 |
| 6. Świadczenia na rzecz kościoła | 221 |
| 7. Zagadnienie kultów | 223 |
| 8. Zwyczaje i zabobony | 229 |

Spis treści

| | |
|--|-----|
| Rozdział IV | |
| Kościół parafialny | 235 |
| 1. Budynek kościelny | 236 |
| 2. Wyposażenie kościoła | 253 |
| 3. Cmentarz | 265 |
| 4. Utrzymanie kościoła | 266 |
| 5. Służba kościelna | 275 |
| Rozdział V | |
| Szkołnictwo i opieka społeczna | 279 |
| 1. Szkoły | 279 |
| a) Rozwój sieci szkół parafialnych | 279 |
| b) Program nauczania i nauczający | 308 |
| 2. Szpitale | 317 |
| a) Rozwój sieci szpitali | 317 |
| b) Szpital – beneficjum kościelnym | 321 |
| c) Uposażenie i jego zarząd | 323 |
| d) Patronat | 326 |
| e) Wezwania kościołów szpitalnych | 326 |
| Zakończenie | 329 |
| Aneksy | |
| Aneks I Wykaz szkół parafialnych w archidiecezji gnieźnieńskiej | 335 |
| Aneks II Wykaz szkół parafialnych w diecezji krakowskiej | 349 |
| Aneks III Archidiecezja pułuska wg Rejestru z r. 1530 | 371 |
| Aneks IV Liczba beneficjów i duchowieństwa w poszczególnych dekanatach wg ksiąg kontrybucji z lat 1513, 1527 i 1539 | 375 |
| Bibliografia | |
| Źródła niewydane | 385 |
| Źródła wydane | 385 |
| Opracowania | 388 |
| Wykaz skrótów | 401 |
| Indeks geograficzny | 405 |
| Zusammenfassung | 431 |
| Spis map | 435 |
| Spis tabel | 435 |
| Spis rycin | 438 |
| Spis fotografii | 439 |

Zusammenfassung

Die vorliegende Arbeit präsentiert den Beginn und die Entwicklung der Pfarrorganisation in den polnischen Gebieten im Mittelalter. Die Pfarrei bildete damals nicht nur die niedrigste Stufe im Verwaltungssystem der Kirche, sondern auch die Grundzelle des sozialen Lebens. Daher wurde in der Arbeit auch nicht nur ihre institutionelle Entwicklung berücksichtigt, sondern auch die weitreichenden sozialen Funktionen der Pfarrei.

Obwohl das Vorhandensein von Pfarreien in Polen im 11. Jahrhundert strittig ist, steht ihre Existenz im 12. Jahrhundert außer Zweifel. Ihre Gesamtzahl am Ende des 12. Jahrhunderts kann auf 800-1000 geschätzt werden. Intensiv entwickelte sich das Pfarreienetz in den darauffolgenden Jahrhunderten. Für den Beginn des 14. Jahrhunderts wird die Zahl der Pfarreien in den polnischen Gebieten auf etwa 2.900-3.500 geschätzt, und zu Beginn des 16. Jahrhunderts gab es auf einem etwa mit dem heutigen Polen deckungsgleichen Territorium ungefähr 6.000 Pfarreien. Viel dünner war das Pfarreienetz in den weiter östlich gelegenen Gebieten des polnisch-litauischen Staates, in denen die Kirchenorganisation erst im 14.-15. Jahrhundert entstanden war.

Charakteristisch für die polnischen Pfarreien war die entschiedene Überlegenheit des weltlichen Patronats, das in den Ostgebieten über 90% betrug, im Erzbistum Gnesen dagegen nur 75%.

Von den vielen Kategorien des in den Pfarreien arbeitenden Klerus waren die Pfarrer und Vikare am zahlreichsten vertreten. Die Pfarrer waren die Hauptverwalter der Pfarrei. Normalerweise stand ein Pfarrer an der Spitze der Pfarrei, aber im 14. Jahrhundert und später konnte es durchaus vorkommen, daß es in einer Pfarrei zwei, drei oder sogar vier Pfarrer gab, die gleich-

rangige Stellungen einnahmen. In der Diözese Krakau wurden 21 derartige Pfarreien festgestellt. Die Ursachen dafür konnten unterschiedlich sein: mehrere Patrone, eine ethnisch gemischte polnisch-deutsche Bevölkerung oder Überreste früherer Kanonikergruppen. Manchmal blieben die Pfarreien aus unterschiedlichen Gründen für längere Zeit ohne Pfarrer, und eine häufige Ursache für das Fehlen des Pfarrherrn war seine Nichtresidenz.

Um ein richtiges Funktionieren der Pfarrei zu ermöglichen, mußte jedem Pfarrer eine entsprechende Versorgung gewährleistet werden. Zu deren Grundbestandteilen gehörten Landbesitz und der Zehnte, gewisse Nutzungsrechte sowie Abgaben der Gläubigen. Die sich daraus ergebenden Einkünfte waren unterschiedlich, sie schwankten von etwa 5 bis über 30 Grzywna.

Zur Kompetenz des Pfarrers gehörte die Auswahl der Helfer für die von den Vikaren geleistete Seelsorgearbeit. Nicht selten ruhte die Seelsorgearbeit ausschließlich auf deren Schultern, wie zum Beispiel im Falle der Nichtresidenz des Pfarrherrn oder falls er keine Priesterweihe besaß. Die Entlohnung der Vikare gestaltete sich unterschiedlich und war von der mit dem Pfarrer getroffenen Übereinkunft abhängig. Im allgemeinen war sie nicht sehr hoch – sie schwankte zwischen 2-3 Grzywna. Nicht in allen Pfarreien gab es Vikare. Im Erzbistum Gnesen waren zu Beginn des 16. Jahrhunderts in etwa 71% aller Pfarreien Vikare tätig, in der Diözese Krakau in 81% aller Pfarreien. In städtischen Pfarreien waren die Vikare viel häufiger.

Außerdem gab es auf dem Gebiet der Pfarrei andere Vertreter des Klerus, die entweder feste Einnahmequellen besaßen, wie zum Beispiel Präbendare, Mansionare und Prediger, oder aber – öfter – von der Entlohnung lebten, die sie aufgrund der mit dem Pfarrherrn geschlossenen Übereinkunft für bestimmte Arbeiten erhielten. Sie trugen verschiedene Namen: Lektoren, Gratialisten, Kommendare und Küster.

Im Mittelalter war die Kumulation von Pfründen eine weit verbreitete Erscheinung. Die Angaben von 1529 für die Krakauer Diözese erlauben die Feststellung, daß diese Kumulation hier 26% aller Pfründen betraf, und vom Gesichtspunkt der kumulierten Pfründen waren 35% Pfarreipfründen und 65% Präbendarpfründen.

Die vorhandenen Angaben erlauben, für den Beginn des 16. Jahrhunderts eine mittlere Dichte von etwa 2 Geistlichen je Pfarrei anzunehmen. Im Verhältnis zu den 6.000 damals existierenden Pfarreien ergibt das eine Gesamtzahl von etwa 12.000 Geistlichen. Zu dieser Zahl muß noch der Klerus der größeren Städte hinzugezählt werden, in denen es zwischen einem Dutzend bis zu mehreren Hundert Geistlichen gab, deren Gesamtzahl auf ungefähr 1.000-1.500 geschätzt werden kann. Daher kann für den Beginn des 16. Jahrhunderts für Polen – innerhalb der genannten Grenzen – eine Gesamtzahl von etwa 10.000-13.500 Geistlichen angenommen werden.

Im Verhältnis zur Gesamtzahl der Bewohner Kleinpolens, für die wir die entsprechenden Angaben besitzen, können wir feststellen, daß hier um 1200 ein Geistlicher auf etwa 1.020 Bewohner kam, während später, um das Jahr 1500, ein Geistlicher auf etwa 550 Bewohner entfiel. Daraus folgt, daß sich die Zahl der uns interessierenden Geistlichen innerhalb von 300 Jahren im Verhältnis zur Bevölkerung fast verdoppelt hat.

Auf dem Gebiet des Kirchenbaus überwiegen unter den Pfarrkirchen während des gesamten Berichtszeitraums die einschiffigen Kirchen, die bis zum Ausgang des Mittelalters vorwiegend Holzkirchen waren. Die Regel bildete auch das Vorhandensein von Glockentürmen neben den Kirchen im 15. Jahrhundert, zumindest in bestimmten Gebieten.

In enger Verbindung mit den Pfarrkirchen standen die Schulen. Auf polnischem Boden sind diese seit der ersten Hälfte des 13. Jahrhunderts nachweisbar. Später wuchs ihre Zahl, so daß die Schulen im ausgehenden Mittelalter eine allgemein übliche Erscheinung bildeten. Im Erzbistum Gnesen und in der Diözese Krakau gab es in etwa 90% aller Pfarreien Schulen, in der Diözese Plock in fast allen Pfarreien. Dagegen waren mit der Pfarrei verbundene Spitäler noch eine Seltenheit. Seit dem Ende des 13. Jahrhunderts bis ins 16. Jahrhundert hinein entstanden derartige Spitäler fast ausschließlich in Städten, deren Zahl auf etwa 30% geschätzt werden kann.

Die durchgeführte Analyse der Entwicklung des Pfarreienetzes erlaubt, dabei drei Hauptstapen zu unterscheiden: die erste, grundlegende, seit dem Beginn des 13. Jahrhunderts, als das Netz der Seelsorgepunkte im Prinzip die gesamte Gesellschaft erfaßte; die zweite, ergänzende Periode, die bis zum Beginn, mancherorts auch bis zur Mitte des 14. Jahrhunderts andauerte und in der die Pfarreien sowohl auf der Grundlage der früheren Besiedelung als auch im Zusammenhang mit der Entwicklung neuer Siedlungszentren entstanden; und die dritte, in der vor allem die Entwicklung der Besiedelung über die Entstehung neuer Pfarrzentren entschied. In dieser Zeit stabilisierte sich gleichzeitig das Pfarreienetz, ohne in den meisten Gebieten bis ins 20. Jahrhundert hinein größeren Veränderungen zu unterliegen.

Diese Periodisierung entspricht auch den Entwicklungsetappen der inneren Pfarrstruktur. In der ersten Periode dominierten Pfarreien mit unterentwickelter Struktur. In der zweiten entstanden neue Elemente der Pfarrorganisation – Schulen, Spitäler, Bruderschaften, Küster, neue Kategorien des Klerus – und traten immer deutlicher in Erscheinung. Und die dritte Periode zeichnet sich durch die Verbreitung dieser vielfältigen neuen Elemente aus, die bereits früher entstanden waren.

Aus dem Polnischen übersetzt von
Herbert Ulrich